# स्वामी चिन्मय

स्वामी चिन्मय के बारे में सभी जानते हैं। उन्होंने इस भूमण्डल को हिला कर रख दिया है। उन्होंने अकेले ही बहुत परिश्रम किया। पता नहीं क्यों, उनके मन में सबको ठीक करने की बड़ी इच्छा है। वे सभी को तुरन्त आत्मज्ञान का बोध कराने के लिए तत्पर रहते हैं। भगवद्गीता और उपनिषदों का उन्हें अच्छा ज्ञान है। वे स्वयं मास्टर बनने के लिए ही स्वामी शिवानन्द और स्वामी तपोवन जी के पास गए और उनका शिष्यत्व प्राप्त किया।

स्वामी चिन्मय के व्यक्तित्व में अनेक विरोधी गुणों का समन्वय है–छोटे बच्चों का शोर, नौजवानों का जोश, प्रौढ़ों की कार्य दीक्षा, बूढ़ों का लोकज्ञान, योगियों की एकाग्रता, ऋषियों की दार्शनिकता, प्रवक्ताओं का तेज, नेताओं की वाक्पटुता, राजाओं की आन और शहंशाहों की शान–सभी कुछ उनमें विद्यमान है।

1976 में उनके सामने मुरली वादन का एकअवसर मुझे कर्नूल में प्राप्त हुआ। उन्हें मुरली धुन सुन कर बहुत आनन्द मिला और उन्होंने पूछा कि तुम इतने समय से कहा थे। दस सालों के बाद हांगकांग में फिर दूसरी मुलाकात हुई।

'चिन्मय' और 'गीता' समानार्थी शब्द हो गए है।गीता पर उनके इतने प्रवचन हैं कि उनका नाम और गीता एक ही से लगते हैं। न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में ज्ञानयज्ञ उन्होंने ही शुरू किया। उनके द्वारा स्थापित आध्यात्मिक स्कूलों की संख्या अगणित है। ये सच्चे समाज सुधारक हैं।

अंग्रेजी भाषा पर उनका पूरा अधिकार है। सदा मुखमण्डल पर मुस्कान खिली रहती है। पिछली कई शताब्दियों में भारतवासियों का मस्तक उन्हीं के कारण गर्व से ऊँचा उठा है। हर पिरामिड मास्टर को स्वामी जा से प्रेरणा और स्फूर्ति लेनी चाहिए।

एक बार स्वामी चिन्मय और डॉ० श्रीपाद पिनाकपाणि, जो कर्नूल चिन्मय मिशन के अध्यक्ष थे, एक साथ मोटर गाड़ी में कहीं जा रहे थे। उन्होंने चिन्मयजी से कहा कि विवेकानन्द ने जो काम शुरू किया था, आप उसे समाप्त करेंगे। तब स्वामी जी ने हँस कर कहा–मैं उस कार्य का समापन करूँगा, उसे समाप्त नहीं करूँगा।

स्वामी चिन्मय के नाम आत्मज्ञान और अद्वैत शिखर आदि का हम सब की ओर से अभिनन्दन है।